

# आन्दोलन जीवन का प्रवाह है



जीवन गतिहीन निस्तेज जड़ता न होकर नित नये प्रवाह की तरह निरन्तर गतिशील तेजस्विता का पर्याय है। किसी सरकार का आना-जाना बनना बिगड़ना महज एक घटना है। प्रायः सरकारें लकीर की फकीर की तरह होती हैं पर जनआन्दोलन हर बार सृजनात्मक परिवर्तन की नयी नयी लकीरें खींचना चाहता है। हर आन्दोलन का मूल विचार एकदम सफल ही हो यह आवश्यक नहीं पर हर आन्दोलन में एक सपने को साकार करने की संभावना जरूर छिपी होती है। जीवन एक वैचारिक आन्दोलन है तभी तो वह सतत नित नये प्रयोगों के विचारों से प्रवाहमान होता रहता है। सरकारें कई रूप रंगों की होती हैं पर आन्दोलन का एक ही रूप और रंग होता है। जीवन के सवालों को बिना डरे पूरी मानवीय ताकत से उठाना और समाधान तलाशते रहना। दुनिया में जब तक जीवन है तब तक आन्दोलन होते रहेंगे। जिस दिन जीवन ही जड़ हो जाये या अचेतन में चला जायेगा तो आन्दोलन मंद हो जायेगा पर खत्म नहीं होगा।

आन्दोलन एक तरह से गतिशील जीवन की जीवनी शक्ति है या जीवन की सनातन विरासत। जीवन ही आन्दोलन है या आन्दोलन ही जीवन है। अवाम, जनता या लोग कभी आन्दोलन से नहीं घबराते, आन्दोलन तो अवाम की जीवनी शक्ति की तरह है। अवाम की जीवनी शक्ति से हर रूप रंग की सरकार की संवेदनशीलता बढ़नी चाहिये पर कोई भी सरकार न तो आन्दोलन का स्वागत करती है और न ही खुद होकर आगे बढ़कर संवाद प्रारम्भ करती है। उत्तरदायी सरकारें भी आन्दोलन के सवालों को लेकर पता नहीं क्यों लगभग हमेशा अनुत्तरदायी या अनमनी ही बनी रहती हैं? अपने ही लोगों से खुलेमन से संवाद में हिचकीचाहट क्यों? आन्दोलनों को लेकर सरकारों का अनमनापन सरकारों के कामकाज करने की मूल दृष्टिहीनता को ही उजागर करता है।

सरकारें आन्दोलनों को कुचलने के बजाय जनमानस के असंतोष या विचारों को देखने समझने का अवसर आन्दोलन में देखें समझे तो देश और दुनिया की सरकारें ज्यादा असरकारी रूप में अपना कामकाज कर पायेगी। जिस दृष्टि से समस्याओं को सरकारें देख समझ नहीं पाती वह दृष्टि और समझ आन्दोलनों से खुले संवाद से अनायास ही मिल सकती है। आन्दोलन जनमानस में उठ रहे सवालों को समझने का खुला अवसर है यह देश और दुनिया की सरकारों को समझ नहीं आता और सरकारें आन्दोलन को खत्म करने या कुचलने के तौर तरीकों में उलझकर समस्या के समाधान के बजाय अपने देश के लोगों से ही घमासान में अपनी ताकत झोंक देती हैं। देश और दुनिया में लोगों ने सरकारों को जन्म ही जनसमस्याओं के सहज और निरन्तर समाधान के लिये ही दिया है न कि जनमानस की अनसुनीकर निरन्तर अपने ही नागरिकों से अकारण घमासान करते रहने के लिये।

शायद दुनिया में लोकमानस की सतत रखवाली करने वाली ऐसी सरकार कभी भी नहीं आयेगी जो आन्दोलन की राह को लोकमानस में जन्मने ही न दे। इसका मूल कारण सरकार का महज एक घटना होना है। घटना घटती रहती है पर हर समय सरकार जीवन्त गतिशील और प्रवाहमय नहीं हो सकती है। सरकारों की यही वैचारिक जड़ता आन्दोलनों की असली तासिर को समझे बिना ही अपनी सरकारी ठसक में मगन रहती है। खेती किसानों की निरन्तरता को बनाये रखनेवाला बुनियादी प्राकृतिक काम है। खेती किसानों करने वाली जमाते प्रायः खेती किसानों जैसे सतत प्राकृतिक उत्पादक कामकाज में ही जुटे रहते हैं। विधि विधान बनाने का विधायी कामकाज संसद और विधायिका का सामान्य कामकाज है।

इन दिनों भारत के लोकतंत्र में सवाल उठाने वाली जमाते प्रायः मौन हो चली है और मौन रहने वाली जमाते बुनियादी सवाल बुलन्दी से उठा रही हैं। जब संसद मौन हो जाती है तो सड़कें बोलने लगती हैं। सड़कों पर आवाज बुलन्द होने का अर्थ ही है कि संसद बहस चर्चा विचार विमर्श के बजाय चुप हो गयी है। संसद में बहस न हो तो विधायी कार्य यंत्रवत जड़ता में बदल जाता है। जीवन्त और समग्रता से निर्भिक बहस ही संसदीय प्रणाली की जान है। संसद में सन्नाटे से ही सड़कें मुखरता से आवाज उठाती हैं। सड़कों पर उठे लोगों के सवाल लोकतंत्र को निखारते हैं। सड़क महज आवागमन का जड़ साधन नहीं लोगों की आवाज उठाने वाला प्रभावी औजार है। आवाज उठाते लोग व्यवस्था को निरन्तर सतर्क और चाकचौबन्द बनाये रखने में मदद करते हैं। जब अवाम सड़क पर आती है तो देश दुनिया की सारी सरकारें कहने लगती हैं लोगों को आवागमन में परेशानी हो रही है। सरकारें लोकजीवन की परेशानी को निरन्तर समझने और सुलझाने में प्राणप्रण से रूचि नहीं लेती और जब लोगों के पास कहीं सुनवाई का कोई रास्ता नहीं बचता तो वे मजबूर होकर सड़क पर आते हैं और सरकारों को अपने मूलदायित्व से भटकने से बचाते हैं। तभी तो भारत के संविधान में शांतिपूर्ण तरिके से लोगों को एकत्रित हो अपनी बात अभिव्यक्त करने का मूल अधिकार रखा गया है।

आजादी के आन्दोलन में चंपारण के किसानों ने बुनियादी सवाल उठाया था। आज आजाद और लोकतांत्रिक भारत के किसान भी बुनियादी सवाल उठा रहे हैं। भारत की खेती किसानों का बुनियादी ढांचा कैसा होगा? किसान स्वयं अपना मालिक होगा या बाजार का एक अदना मोहरा? बाजार का राज चलेगा या खेती किसानों में स्वराज रहेगा। मंडी या खेती किसानों या उपज के न्यूनतम मूल्य, क्रय विक्रय और भंडारण से संबन्धित तीनों कानून को जिस तरह से वर्तमान संसद और सरकार ने पारित किया उस तरीके ने सोती हुई जनता को जगा दिया और आम तौर पर चुप रहने वाली खेतिहर जमाते जिस तेजस्विता और तेवर से सवाल उठा रही है उससे समूचे देश में यह खुला संदेश गया है कि हमारे लोकतंत्र का तंत्र भले ही जड़ हो गया हो पर लोक तो चैतन्य है।

सरकार जब यह मानने लगती है कि हम तो सरकार हैं हम जो करेंगे उसे सब मानेंगे ही तो सरकार असरकारी नहीं रह पाती। वही सरकार असरकारी हो सकती है जो सब को साथी सहयोगी माने, किसी से न तो कुछ छिपाये और न ही किसी को डराये। अच्छे कानून वे होते हैं जो आम जनता को अपने आप समझ आ जाय अभियान चला कर या रैलियां कर समझाना न पड़े। जैसे सूरज उगता है तो उजाला अपने आप आ जाता है वैसे ही कानून को बनाने का तरीका भी हर देशवासी के मन को शंका से परे हर बार खुला और पारदर्शी रहना ही चाहिए। चुनी हुई सरकारें भी गलती से परे नहीं है। संसद भी गलती से

परे नहीं है। लोकतंत्र का मतलब ही है कि हम सब अपनी जानी अनजानी गलतियों से निरन्तर अवगत होते रहे और अपने निर्णयों व व्यवहार में हुई गलतियों को स्वीकार कर सुधारते रहे। लोकतंत्र सतत चलने वाली वह लोकव्यवस्था है जिसमें हम मिलजुल कर खुले मन से एक दूसरे से सीखते- सिखाते हैं। लोकतंत्र में सीखने की तो अंतहीन गुंजाइश है पर अपनी गलती पर अवाम को सबक सिखाने का कोई अवसर ही नहीं है।

भारत में खेती किसानों का एक जीवनपद्धति है। लाभ हानि का व्यापार नहीं। भारतीय खेती किसानों की यंत्रवत उत्पादन और वितरण का व्यवहार न होकर जीवन की सनातन सभ्यता है। सभ्यता की जीवनी शक्ति ही भारतीय खेती किसानों की मूल ताकत है। भारत का किसान जानता समझता है कि खेती किसानों का कुदरती तरीका क्या है। किसानों करने वाले नौकर चाकर और वेतनभोगी यंत्रवत व्यवस्थागत कामकाज करने वाली जमाते न होकर इस देश के चप्पे चप्पे में अपनी समझ, साधन, सहयोग के साथ अकेले अपनी रोटी ही नहीं अपने गांव देश और दुनिया की रोटी की खुराक पैदा करने में सदियों से बिना रूके और झुके लगी हुई विकेन्द्रित जीवन्त बिरादरी है जो केवल खुद की ही नहीं प्राणीमात्र की जीवन की जरूरत यानी खुराक को पैदा करने में अपना सब कुछ लुटाती आयी है और लुटाती रहेगी। यही आज के भारत में चल रहे किसान आन्दोलन की जीवनी शक्ति और हम सब के जीवन का खुला सवाल है जिसका हल हमें हिल मिलकर खोजना ही होगा। हिलमिलकर जीना और सबको समझना समझाना यही आन्दोलनकारी जीवन का सरल सहज अर्थ है।

अनिल त्रिवेदी

स्वतंत्र लेखक व अभिभाषक

त्रिवेदी परिसर ३०४/२ भोलाराम उस्ताद मार्ग

ग्राम पिपल्याराव आगरा बम्बई राजमार्ग

इंदौर (म.प्र.)-पिन ४५२००९

मो.9329947486

email-aniltrivedi.advocate@gmail.com